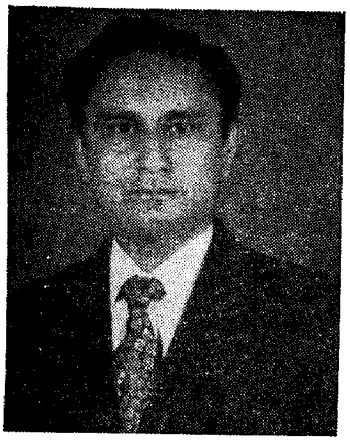

रेगिस्तान का प्राचीन तीर्थ श्री भांडवाजी

भूरचंद जैन

राजस्थान प्रदेश के जालोर जिले का प्राचीन ऐतिहासिक गतिविधियों के साथ साथ धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण स्थान रहा है। जालोर का स्वर्णगिरि दुर्ग धार्मिक सहिष्णुता का अनोखा स्थल बना हुआ है। जिसकी गोद में हिन्दुओं के पवित्र मंदिर, मुसलमानों की मस्जिदों एवं जैन धर्मावलंबियों के श्रद्धास्थल, जैन मंदिरों की भरमार है। इस जिले के अन्दर जैन धर्मावलम्बियों के अनेकों ख्याति-प्राप्त मंदिरों के ऊंचे-ऊंचे शिखर दृष्टिगोचर होते हैं। इन मंदिरों के अतिरिक्त जिले के सांचोर भीनमाल जैसे स्थानों पर प्राचीन जैन मंदिर विद्यमान हैं जो तीर्थस्थानों के लिए लोकप्रिय बने हुए हैं। जिनकी शिल्पकला, वास्तुकला, प्राचीनता देखने योग्य है। इसी तरह जिले का चरली तीर्थ प्राचीनता के लिए इतना ही विख्यात है जितना आधुनिक शिल्पकला एवं बनावट के लिए मांडोली नगर में नवनिर्मित श्री शांतिसूरीश्वरजी महाराज साहब का स्मृति गुरु मंदिर। इस जिले के तीर्थों की कड़ी को जोड़ने में भांडवा तीर्थ आज अधिकाधिक लोकप्रिय बनने के साथ साथ-श्रद्धा एवं भक्ति का प्रमुख केन्द्र बना हुआ है जो जिले के रेगिस्तानी क्षेत्र में आया हुआ है। इसकी प्राचीनता, मूर्ति का चमत्कार, मंदिर की बनावट, मेले की व्यवस्था के कारण यहां यात्रियों का निरन्तर तांता लगा रहता है।

भांडवा इस समय एक छोटा सा गांव है जो जालोर जिले के सायला पंचायत समिति का अंग है। यहां आने के लिए जोधपुर से रानीवाडा रेल्वे लाईन पर स्थित गोदरा स्टेशन पर उतरना पड़ता है यहां से यह स्थल २२ मील दूर उत्तर-पश्चिम में सड़क यातायात से जुड़ा हुआ है। जोधपुर-बाडमेर सड़क मार्ग पर स्थित आलोतरा से ३५ मील दूर पारलू बीवाणा होते हुए भांवडा कच्चा सड़क मार्ग बना हुआ है। इसी प्रकार जोधपुर बाडमेर सड़क मार्ग पर सिणधरी से २६ मील दूर भांडवा जाने के लिए कच्चा सड़क मार्ग बना हुआ है। जालोर से यह स्थल पक्के सड़क मार्ग से ३६ मील दूर है। इन सभी स्थलों से नियमित बसों का आवागमन होता है। मेले के दिनों में जालोर-सायला आदि स्थलों से भांडवा पहुंचने हेतु विशेष बसों की समुचित व्यवस्था की जाती है। रेगिस्तानी क्षेत्र होने के कारण यहां के आसपास के दियापटी के लोग ऊंटों, बैलगाड़ियों आदि पर चढ़कर इस भारत विख्यात जैन तीर्थ की यात्रा करने का सौभाग्य प्राप्त करते हैं।

भांडवा गांव के एक किनारे पर विशाल पक्की चार दीवारी के अन्दर १० वीं शताब्दी में निर्मित श्री महावीर स्वामी का भव्य मंदिर, अनेकों धर्मशालाओं सहित विद्यमान है। इस मंदिर के एक स्तम्भ पर वि. सं. ८१३ श्री महावीर स्वामी लिखा हुआ विद्यमान है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान महावीर स्वामी के इस मंदिर में प्रतिष्ठित प्रतिमा का संबंध इस संवत् से है। क्योंकि यह प्रतिमा जालोर क्षेत्र में वेसाला गांव से यहां आई बताई जाती है। वेसाला पर मेमन धाड़ेतियों ने आक्रमण कर गांव को लूटा और वहां बने प्राचीन महावीर मंदिर को नष्ट किया। लेकिन संयोगवश मूल महावीर स्वामी की प्रतिमा खंडित होने से बच गई। जिसे कोमला गांव के जैन संघ मुखिया पालाजी संघवी लेकर यहां आए। इन्हें देवी चमत्कार से यहां मंदिर बनाने और महावीर स्वामी की प्रतिमा की मूल रूप से प्रतिष्ठित करने का संकेत मिला।

संघवी पालजी ने समस्त जैन श्री संघ के सहयोग से यहां वि. सं. १०१५ में मंदिर का निर्माण करना आरंभ किया। जिसकी प्रतिष्ठा वि. सं. १२३३ माघ सुदी ५ को गुरुवार को भव्य समारोह के बीच संपन्न हुई। वर्तमान में यह मंदिर पूर्वाभिमुख है। जिसके प्रवेश द्वार पर विशाल हाथियों के अतिरिक्त दोनों ओर शेर की प्रतिमाएं विराजमान हैं। द्वार पर नगारे बजाने हेतु सुन्दर झरोखा बना हुआ है। मंदिर के मूल गम्मारे में जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी की मूल प्रतिमा विराजमान है। जिसके आज-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बाजू श्री शांतिनाथ एवं श्री पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमाएं हैं। गूठ मण्डप में अधिष्ठायक देवी की प्रतिमा एवं देवताओं के चरण पादुकाएं विराजमान हैं। इसके अतिरिक्त भाग में दोनों ओर दरवाजे हैं जिनके पास ही प्राचीरों पर समवसरण, शत्रुंजय, अष्टापद, राजगिरी, नेमीनाथ प्रभु की बरात, सम्मेद शिखर, गिरनार, पावापुरी के सुन्दर एवं कलात्मक पट्ट लगे हुए हैं। आगे चार-चार खम्भों पर आधारित सभा मण्डप है। जिसकी गोलाकार गुमटी में नृत्य एवं वाद्ययंत्रों को बजाती नारियों की मूर्तियां खड़ी हुई हैं। जिसके आगे एवं प्रवेश द्वार के समीप ऐसा ही छोटा शृंगार मण्डप है जिसके निचले भाग में संगीत यंत्रों को बजाती नारियों की आकृतियां मूर्तिरूप धारण किए हुए हैं।

मूल मंदिर के चारों ओर चार कुलिकाओं के शिखर दृष्टि गोचर होते हैं। प्रत्येक देव कुलिकाओं में तीन तीन जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाओं को वि. सं. २०१० ज्येष्ठ शुक्ला दसमी सोमवार को आचार्य देव श्रीमद् विजययतीन्द्र सूरीश्वरजी महाराज साहब की निश्रा में भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव के बीच प्रतिष्ठित किया गया है। इसी मूल मंदिर के शिखर के पीछे एक लम्बी तीन घुमटियों वाली साल बनी हुई है जिसमें भी पार्श्वनाथ प्रभु की चार सुन्दर, कलात्मक प्रतिमाओं के साथ एक प्रतिमा श्री गौतम स्वामी की प्रतिष्ठित की हुई है। इस साल में श्री पार्श्वनाथ स्वामी की तीन प्रतिमाएं श्यामवर्णी हैं। मंदिर के प्रवेश द्वार के आन्तरिक भाग के दोनों किनारों पर बनी देव कुलिकाओं के आसपास दो छोटी डेरियां बनी हुई हैं जिसमें आचार्यदेव श्रीमद् विजय धन-सुन्दरसूरीजी एवं आचार्यदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरीश्वरजी की प्रतिमाएं विराजमान की हुई हैं। प्रवेश द्वार के आंतरिक मंदिर भाग में बने छोटे आलों में श्री मातंग यक्ष एवं श्री सिद्धायिका देवी की प्रतिमा भी प्रतिष्ठित की हुई हैं। चारों देव कुलिकाएं आमने सामने हैं जिसके बीच में ग्यारह ग्यारह खम्भे बने हुए हैं।

वि. सं. १०१५ में निर्मित श्री महावीर स्वामी के इस मंदिर की पहली प्रतिष्ठा वि. सं. १२३३ में हुई। इस मंदिर का पहला जीर्णोद्धार वि. सं. १३५९ में करवाया गया। दियावटी पट्टी जैन श्री संघ ने दूसरी बार वि. सं. १६५४ में एवं तीसरी बार जीर्णोद्धार वि. सं. १९८८ में आचार्यदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी महाराज के सद्उपदेश से जैन श्री संघ द्वारा करवाया गया। इन्हीं आचार्य महाराज की प्रेरणा से वि. सं. २०१० में भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित हुआ जिसमें चार नवीन देवकुलिकाओं, लम्बी साल एवं गुरु प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा करवाई। इस मंदिर की प्राचीरों एवं प्रतिमाओं आदि स्थानों पर वि. सं. १२०१, १२२५, १२५९, १५१६ एवं १७५७ के कुछ प्राचीन शिलालेख भी विद्यमान हैं। मंदिरों की प्राचीरों, खम्भों आदि पर आसलेट की चढ़ाई करने से प्राचीनता अवश्य ही लुप्त हो चुकी है। मंदिर के संपूर्ण फर्श पर संगमरमर के पाषाण जोड़े गए हैं।

भांडवा का मंदिर जितना पुराना है उतना ही यह गांव भी प्राचीन है। इस गांव की स्थापना जावाली जालोर निवासी परमार भांडूसिंह ने वि. सं. ३ के अंत में की थी। जिसके कारण इस स्थल का नाम भांडवा पड़ा। जो प्राचीन समय में विशाल नगरी होने के कारण भाण्डवपुर के नाम से भी विख्यात रहा है। परमारों से यह स्थल वि. सं. १३२२ में दईया राजपूत बुहेडसिंह ने लिया। जिसके पश्चात् यह क्षेत्र दईया पट्टी दया पट्टी के नाम से परिचायक बना। लम्बे समय के पश्चात् यह स्थल वि. सं. १८०७ में दइया राजपूतों से निकल कर आणा गांव के ठाकुर भाटी मालमसिंह के अधीन रहा। वि. सं. १८६४ में यह प्राचीन स्थल जोधपुर राज-घराने की अधीनता में भी रहा। भारत स्वतंत्र होने के पश्चात् आजकल यह राजस्थान प्रदेश के जालोर जिले का सर्व विख्यात भाण्डवपुर जैन तीर्थ के नाम से परिचायक बना हुआ है।

जैन धर्मावलम्बियों के २४ वें तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी का यह तीर्थस्थल होने के कारण यहां प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ला १३ से १५ तक विशाल पैमाने पर मेले का आयोजन होता है इस मेले में देश के विभिन्न क्षेत्रों से करीबन दस हजार से अधिक यात्री एवं दर्शनार्थी भाग लेने एकत्रित होते हैं। मेले में धार्मिक कार्यक्रमों के अतिरिक्त नाना प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन होता है। इस तीर्थ पर विशाल धर्मशालाएं बनी हुई हैं जिसके अन्तर्गत करीबन २०० आवासीय कोठरियां बनी हुई हैं। यात्रियों के ठहरने, खाने-पीने, बर्तन बिस्तरों आदि की समुचित व्यवस्था है। यहां बिजली, पीने के पानी एवं पक्की सड़क के निर्माण कार्यों की भावी योजना बन चुकी है। यदि ये सुविधाएं यहां उपलब्ध हो जावेंगी उस समय यह स्थल अधिक आगन्तुकों के आवागमन का केन्द्र बन जावेगा। यहां सदैव श्रद्धालु भक्तों की भीड़ लगी रहती है। इस मंदिर के आसपास रहने वाले सभी जाति धर्म एवं संप्रदाय के लोग बड़ी श्रद्धा एवं भक्ति से इस मंदिर में प्रतिष्ठित भगवान महावीर स्वामी पर आस्था रखते हैं। यहां के लोगों ने मंदिर के एक मील के दायरे में शिकार खेलना निषेध कर रखा है और इस क्षेत्र में किसी भी प्रकार के पेड़-पौधों का काटना भी मना कर रखा है। इस सम्पूर्ण तीर्थ की देखभाल करने के लिए एक व्यवस्थापक समिति का गठन भी किया हुआ है। □

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org